UGC NET JRF… Paper =2 Sanskrit

Filler Form

YouTube

UNIT-2

Class-6

By=NIDHU CHAUDHARY

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

STUDENTS… FEEDBACK…….

Akrati Rishishwar • 23h ago

Website pr notes proper class wise nhi mil rhe h ?

Online Sanskrit • 23h ago

धन्यवादः

dr.anupama mishra • 18h ago

Nice class mam👍👍

Nishu sharma • 23h ago

👌👌👌👌

THANK YOU..

8209837844

www.ugc-net.com

Unit 1 वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय

- वैदिक साहित्य का इतिहास
- वेदो का रचनाकाल
- संहिता साहित्य
- ब्राह्मण साहित्य
- आरण्यक साहित्य
- वैदिक संवाद सूक्त
- वेदाङ्गो का संक्षिप्त परिचय

8209837844 www.ugc-net.com

Unit_2 वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- = ऋग्वेद : एक परिचय
- = ऋग्वेद - संहिता सूक्त
- = शुक्लयजुवेद -संहिता सूक्त
- = अथर्ववेद -संहिता सूक्त
- = बाह्मण- साहित्य विधि एवं उनके प्रकार
- = उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण,
- = निरूक्त एवं वैदिक व्याख्या- पद्धति

8209837844 www.ugc-net.com

ऋग्वेद

ऋग्वेद

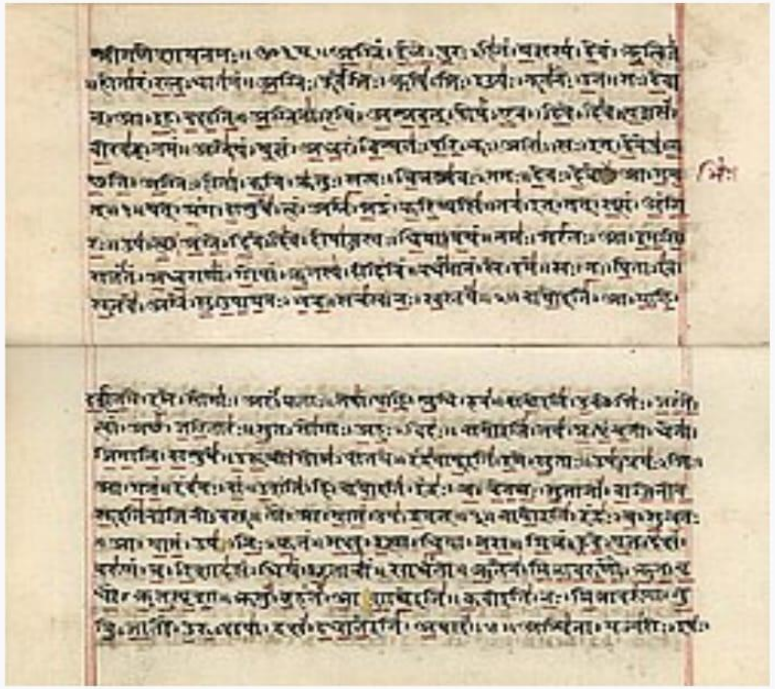

ऋग्वेद की १९ वी शताब्दी की पाण्डुलिपि

ग्रंथ का परिमाण	
श्लोक संख्या(लम्बाई)	१०५८० ऋचाएँ
रचना काल	१८००-११०० ईसा पूर्व

8209837844 www.ugc-net.com

जानकारी	
धर्म	हिन्दू धर्म
भाषा	वैदिक संस्कृत
अवधि	c. 1500 – 1200 BCE[note 1]
अध्याय	10 मण्डल
श्लोक/आयत	10,552 मंत्र[1]

8209837844 www.ugc-net.com

सनातन धर्म का सबसे आरम्भिक स्रोत है। इसमें 10 मण्डल,[2] 1028 सूक्त और वर्तमान में 10,600 मन्त्र हैं, मन्त्र संख्या के विषय में विद्वानों में कुछ मतभेद है। मन्त्रों में देवताओं की स्तुति की गयी है। इसमें देवताओं का यज्ञ में आह्वान करने के लिये मन्त्र हैं। यही सर्वप्रथम वेद है। ऋग्वेद को इतिहासकार हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार की अभी तक उपलब्ध पहली रचनाओं में एक मानते हैं। यह संसार के उन सर्वप्रथम ग्रन्थों में से एक है जिसकी किसी रूप में मान्यता आज तक समाज में बनी हुई है। यह सनातन धर्म का प्रमुख ग्रन्थ है।

8209837844 www.ugc-net.com

ऋग्वेद सबसे पुराना ज्ञात वैदिक संस्कृत पुस्तक है।[3] इसकी प्रारम्भिक परतें किसी भी इंडो-यूरोपीय भाषा में सबसे पुराने मौजूदा ग्रन्थों में से एक हैं।[4][note 2] *ऋग्वेद* की ध्वनियों और ग्रन्थों को दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से मौखिक रूप से प्रसारित किया गया है।[6][7][8] दार्शनिक और भाषाई साक्ष्य इंगित करते हैं कि ऋग्वेद संहिता के थोक की रचना भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में हुई थी, जो कि सबसे अधिक संभावना है- 1500 और 1000 ईसा पूर्व,[9] 1700-1000 BCE भी दिया गया है।

8209837844 www.ugc-net.com

ऋक् संहिता में 10 मण्डल तथा बालखिल्य सहित [[१०२८|1028] सूक्त हैं। वेद मन्त्रों के समूह को सूक्त कहा जाता है, जिसमें एकदैवत्व तथा एकार्थ का ही प्रतिपादन रहता है। ऋग्वेद में ही मृत्युनिवारक त्र्यम्बक-मंत्र या मृत्युंजय मन्त्र (7/59/12) वर्णित है, ऋग्विधान के अनुसार इस मन्त्र के जप के साथ विधिवत व्रत तथा हवन करने से दीर्घ आयु प्राप्त होती है तथा मृत्यु दूर हो कर सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है। विश्व-विख्यात गायत्री मन्त्र (ऋ० 3/62/10) भी इसी में वर्णित है। ऋग्वेद में अनेक प्रकार के लोकोपयोगी-सूक्त, तत्त्वज्ञान-सूक्त, संस्कार-सुक्त उदाहरणतः रोग निवारक-सूक्त (ऋ० 10/137/1-7), श्री सूक्त या लक्ष्मी सूक्त (ऋग्वेद के परिशिष्ट सूक्त के खिलसूक्त में), तत्त्वज्ञान के नासदीय-सूक्त (ऋ० 10/129/1-7) तथा हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ० 1/121/1-10) और विवाह आदि के सूक्त (ऋ० 10/85/1-47) वर्णित हैं, जिनमें ज्ञान विज्ञान का चरमोत्कर्ष दिखलाई देता है।

8209837844

www.ugc-net.com

इस ग्रन्थ को इतिहास की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण रचना माना गया है। ईरानी अवेस्ता की गाथाओं का ऋग्वेद के श्लोकों के जैसे स्वरों में होना, जिसमें कुछ विविध भारतीय देवताओं जैसे अग्नि, वायु, जल, सोम आदि का वर्णन है।

8209837844 www.ugc-net.com

शाखाएँ

ऋग्वेद की जिन २१ शाखाओं का वर्णन मिलता है, उनमें से चरणव्युह ग्रंथ के अनुसार पाँच ही प्रमुख हैं-

१. शाकल, २. वाष्कल, ३. आश्वलायन, ४. शांखायन और ५. माण्डूकायन।

8209837844 www.ugc-net.com

ऋग्वेद : एक परिचय

वैदिक साहित्य से तात्पर्य उस विपुल साहित्य से है जिसमें वेद, ब्राह्मण, अरण्यक एवं उपनिषद् शामिल हैं।

वेद शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है जानना अर्थात् ज्ञान।

वेद ऐसा साहित्यिक भंडार है जो अनेक शताब्दियों के बीच विकसित हुआ जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी लोग कंठस्थ कर सुरक्षित रखते आये हैं।

8209837844 www.ugc-net.com

ऋग्वेद के विषय में कुछ प्रमुख बातें निम्नलिखित है-

ऋग्वेद में कुल दस मण्डल हैं जिनमें १०२८ सूक्त हैं और कुल १०,५८० ऋचाएँ हैं।

इन मण्डलों में कुछ मण्डल छोटे हैं और कुछ बड़े हैं।ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ है जो वर्तमान समय में उपलब्ध है।

ऋग्वेद के कई सूक्तों में विभिन्न वैदिक देवताओं की स्तुति करने वाले मंत्र हैं। यद्यपि ऋग्वेद में अन्य प्रकार के सूक्त भी हैं, परन्तु देवताओं की स्तुति करने वाले स्तोत्रों की प्रधानता है।

ऋग्वेद में ३३ देवी-देवताओं का उल्लेख है। इस वेद में सूर्या, उषा तथा अदिति जैसी देवियों का वर्णन किया है। इसमें अग्नि को आशीर्षा, अपाद, घृतमुख, घृत पृष्ठ, घृत-लोम, अर्चिलोम तथा वभ्रलोम कहा गया है।

इसमें इन्द्र को सर्वमान्य तथा सबसे अधिक शक्तिशाली देवता माना गया है। इन्द्र की स्तुति में ऋग्वेद में २५० ऋचाएँ हैं। ऋग्वेद के एक मण्डल में केवल एक ही देवता की स्तुति में १लोक हैं, वह सोम देवता है।

8209837844 www.ugc-net.com

इस वेद में बहुदेववाद, एकेश्वरवाद, एकात्मवाद का उल्लेख है।ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में निर्गुण ब्रह्म का वर्णन है।

इस वेद में आर्यों के निवास स्थल के लिए सर्वत्र 'सप्त सिन्धवः' शब्द का प्रयोग हुआ है।इस में कुछ अनार्यों जैसे - पिसाकास, सीमियां आदि के नामों का उल्लेख हुआ है। इसमें अनार्यों के लिए 'अव्रत' (व्रतों का पालन न करने वाला), 'मृद्धवाच' (अस्पष्ट वाणी बोलने वाला), 'अनास' (चपटी नाक वाले) कहा गया है।

इस वेद लगभग २५ नदियों का उल्लेख किया गया है जिनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी सिन्धु का वर्णन अधिक है।सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती को माना गया है तथा सरस्वती का उल्लेख भी कई बार हुआ है। इसमें गंगा का प्रयोग एक बार तथा यमुना का प्रयोग तीन बार हुआ है।

ऋग्वेद में राजा का पद वंशानुगत होता था। ऋग्वेद में सूत, रथकार तथा कर्मार नामों का उल्लेख हुआ है, जो राज्याभिषेक के समय पर उपस्थित रहते थे। इन सभी की संख्या राजा को मिलाकर १२ थी।

8209837844 www.ugc-net.com

ऋग्वेद में कई ग्रामों के समूह को 'विश' कहा गया है और अनेक विशों के समूह को 'जन'। ऋग्वेद में 'जन' का उल्लेख २७५ बार तथा 'विश' का १७० बार किया गया है।

एक बड़े प्रशासनिक क्षेत्र के रूप में 'जनपद' का उल्लेख ऋग्वेद में केवल एक बार हुआ है। जनों के प्रधान को 'राजन्' या राजा कहा जाता था। आर्यों के पाँच कबीले होने के कारण उन्हें ऋग्वेद में 'पञ्चजनाः' कहा गया – ये थे- पुरु, यदु, अनु, तुर्वशु तथा द्रहयु।'विदथ' सबसे प्राचीन संस्था थी। इसका ऋग्वेद में १२२ बार उल्लेख आया है।

'समिति' का ९ बार तथा 'सभा' का ८ बार उल्लेख आया है।ऋग्वेद में कृषि का उल्लेख २४ बार हुआ है।ऋग्वेद में में कपड़े के लिए वस्त्र, वास तथा वसन शब्दों का उल्लेख किया गया है। इस वेद में 'भिषक्' को देवताओं का चिकित्सक कहा गया है।इस वेद में केवल हिमालय पर्वत तथा इसकी एक चोटी मुञ्जवन्त का उल्लेख हुआ है।

8209837844 www.ugc-net.com

ऋग्वेद में 'वाय' शब्द का प्रयोग जुलाहा तथा 'ततर' शब्द का प्रयोग करघा के अर्थ में हुआ है।ऋग्वेद के ९वें मण्डल में सोम रस की प्रशंसा की गई है।ऋग्वेद के १०वे मंडल मे पुरुषसुक्त का वर्णन है।

"असतो मा सद्गमय" वाक्य ऋग्वेद से लिया गया है।

सूर्य (सवितृ को सम्बोधित "गायत्री मंत्र" ऋग्वेद में उल्लेखित है।इस वेद में गाय के लिए 'अहन्या' शब्द का प्रयोग किया गया है।

ऋग्वेद में ऐसी कन्याओं के उदाहरण मिलते हैं जो दीर्घकाल तक या आजीवन अविवाहित रहती थीं। इन कन्याओं को 'अमाजू' कहा जाता था।इस वेद में हिरण्यपिण्ड का वर्णन किया गया है। इस वेद में 'तक्षन्' अथवा 'त्वष्ट्रा' का वर्णन किया गया है।

आश्विन का वर्णन भी ऋग्वेद में कई बार हुआ है। आश्विन को नासत्य (अश्विनी कुमार) भी कहा गया है।इस वेद के ७वें मण्डल में सुदास तथा दस राजाओं के मध्य हुए युद्ध का वर्णन किया गया है, जो कि पुरुष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया। इस युद्ध में सुदास की जीत हुई ।

8209837844

www.ugc-net.com

NEXT CLASS

ऋग्वेद - संहिता सूक्त

8209837844

www.ugc-net.com

We want JRF

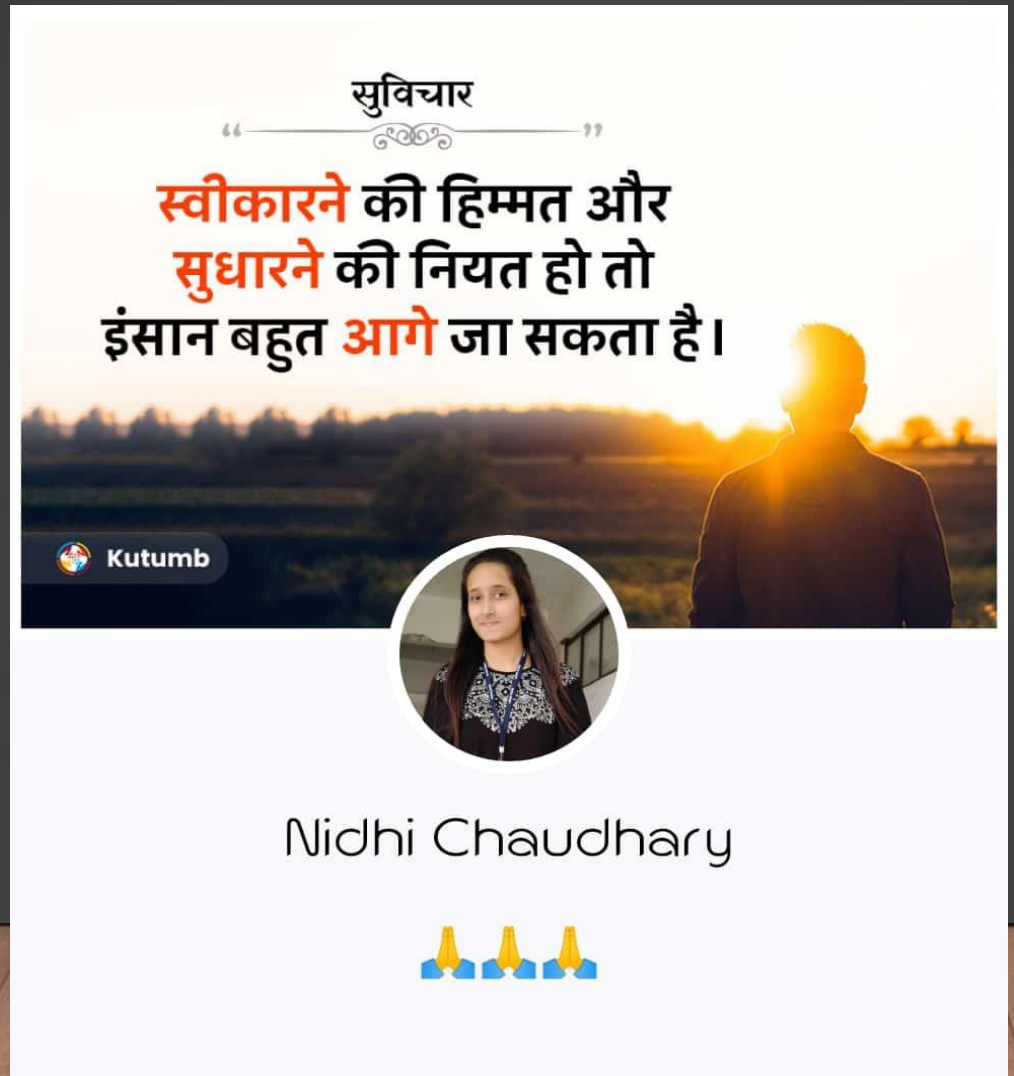

FEEDBACK

💥 आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝 Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com

8209837844